Poonam Shodh Rachna (ISSN 2456-5563)
(A multidisciplinary, peer reviewed and refereed Journal)
Vol.3, Issue.VIII, August 2024, Pc : PSR-2408011

"अरविंदो के शैक्षणिक स्वरूप का समाज पर प्रभाव"

Dr.Deepa Gupta, Assistant Professor,
Shukdev Prasad Tripathi P.G.College
(Gorakhpur University U.P)

सारांश

*प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य अरविंद घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा एवं समाज **में** योगदान का अध्ययन करना है।अरविंद घोष जी एक महान दार्शनिक, आध्यात्मिक तथा मर्मज्ञ शिक्षा शास्त्री थे। आज से वर्षों पहले दिए गए उनके द्वारा शिक्षा पर विचार आज के समय में शिक्षा पर काफी प्रभावोत्पादक **प्रतीत** होते हैं। श्री अरविंदो जी के बहुत से विचार आज **वर्तमान** शिक्षा प्रणाली के अनुरूप है। उनके विचारों के **माध्यम** से शिक्षा को और सुदृढ़ तथा मजबूत बनाया जा सकता है। और इसी संदर्भ में सुधार की आवश्यकता एवं समाज पर प्रभाव का अध्ययन किया गया है। अरविंद का **दर्शन** समग्र रूपों में शिक्षा की ऐसी विधि है जो यथार्थ की सत्ता **में** और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आध्यात्मिक विकास की बात प्रस्तुत करती है। उनका यह मानना है कि बालक **दिव्य** आत्मा होने के कारण अपने अंदर असीम शक्ति छुपाए हुए हैं।अस्तु शिक्षा द्वारा प्रयत्न से रज,रज से सत् की ओर उत्क्रमण कर सकता है। और यही अध्यात्म व भौतिकता का संबंध है। ऐसी शिक्षा छात्र को जगत से पलायन नहीं सिखाती वरन् जगत की वास्तविकताओं के साथ ही **उन्नति** का विश्वास दिलाती है। प्रस्तुत अध्ययन की प्रकृति **दार्शनिक** है। इसका मुख्य आधार शैक्षिक विचार तथा **साहित्य** है। शोध कार्य में तथ्यों का संग्रह प्राथमिक और द्वितीयक **स्रोतों** (प्रमाणिक साहित्य) के माध्यम से किया गया है। श्री अरविंद जी का दर्शन एवं चिन्तन आज के परिपेक्ष्य में बहुत ही कार्यसाधक एवं उपादेय सिद्ध हो सकता है।*

भूमिका-

भारत भूमि पर सदैव महान आत्माओं ने जन्म लिया है उनमें से एक सत्य आत्मा के रूप में महर्षि अरविंदो ने अपना स्थान आरक्षित किया है। शिक्षा पर अरविंद घोष जी के विचार सिद्ध करते हैं कि वह हमारे देश के सबसे समृद्ध एवं प्रसिद्ध **शिक्षा** शास्त्रियों की श्रेणी में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उनके विचार से हमारे देश में जिस प्रकार की शिक्षा की आवश्यकता है वह भारतीय आत्मा, आवश्यकता, स्वभाव और समृद्धि संस्कृति के अनुकूल होनी चाहिए। उनके द्वारा बताए गए भारतीय स्वरूप का (नैतिक बौद्धिक एवं आध्यात्मिक उपलब्धियां)भारत एवं भारतीय समाज के ऊपर उन्नत एवं गहरा असर डालते हैं। वे सांस्कृतिक **दृष्टि** से भारत की एकता तथा अखंडता में विश्वास करते हैं। मानव जीवन में शिक्षा तथा शिक्षा से जुड़ी क्रियाओं का अत्यधिक महत्व **स्थापित** करते हुए अंतिम उद्देश्य सत्य और आनंद की प्राप्ति को शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बताया। भौतिक एवं आध्यात्मिक तत्वों के भिन्नता को जानना ही सच्चा ज्ञान है तथा वस्तु जगत की एवं ज्ञान **ज्ञानेंद्रिय** द्वारा और आत्म तत्व का ज्ञान अंतरण द्वारा होता है ।इस प्रकार दूसरे ज्ञान की प्राप्ति के लिए योग क्रिया को आवश्यक मानते थे। अरविंदो के अनुसार, शिक्षा को मानव के मस्तिष्क तथा **आत्मा** की शक्तियों का निर्माण करना चाहिए।सूचनाओं का संग्रह मात्र शिक्षा नहीं हो सकती। सूचनाऐं ज्ञान की नींव नहीं हो सकती। वे अधिक से अधिक सामग्री हो सकती है जिसके द्वारा जानने वाला अपने ज्ञान की वृद्धि निरंतर करते रहता है अथवा यह वे बिंदु है जहां से ज्ञान को आरंभ किया जाए, या नई खोजों को निकालना प्रारंभ किया जाए। वह शिक्षा जो अपने को ज्ञान देने तक सीमित रखती है शिक्षा नहीं है।वे आगे कहते हैं कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति करें तथा **वर्तमान** में बालकों को कर्मठ नागरिक बनाने में सक्षम साबित हो। **श्री** अरविंद वर्धमान युग के एवं भारतीय ऋषि परंपरा की **उत्कृष्ट** उज्जवल कड़ी है ।उनका दर्शन उपनिषदों के दर्शन के समक्ष है वे उपनिषदों की भाषा का नहीं है।स्वयं उपनिषद सत्य के **द्रष्टव्य** द्रष्टा है। व्यक्ति अपने जीवन दर्शन से दूसरे व्यक्तियों को **प्रभावित** करता है स्वामी विवेकानंद के समान ही अरविंद घोष तथा गांधीजी ने अपने जीवन दर्शन एवं शैक्षिक विचारों को व्यक्ति के जीवन से दर्शाया है। वे उनके जीवन दर्शन के अनुरूप है यह वे विवेक महान दार्शनिक होने साथ-साथ एक महान शिक्षा **शास्त्री** भी थे।वह शिक्षा को उन्नति और विकास के लिए आवश्यक मानते थे। अरविंद जी का शिक्षा दर्शन लक्ष्य की दृष्टि से आदर्शवादी **क्रियात्मक** दृष्टि से प्रयोजनवादी तथा महत्वाकांक्षा की दृष्टि से मानवतावादी है। अरविंद जी पर किए गए शोध में बताया गया है, कि **इन्होंने** शिक्षा के सभी उद्देश्य जैसे शारीरिक विकास ज्ञानेंद्रिय विकास मानसिक विकास नैतिक विकास और आध्यात्मिक विकास सभी का आज की शिक्षा प्रणाली में बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान बताया है। राय (2018) ने अपने शोध द्वारा बताया कि अरविंद घोष जी का शैक्षिक दर्शन आदर्शवादी की श्रेणी में ही आता है। यादव (2018) में अपने शोध में बताया कि शिक्षा वास्तविक जीवन की **आवश्यकताओं** के अनुसार होनी चाहिए ।शारीरिक विकास के लिए शारीरिक शुद्धि होना जरूरी है तथा आध्यात्मिक विकास संभव है। आज वर्षों बाद उनकी शिक्षा का प्रभाव वर्तमान शिक्षा प्रणाली पर स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

हम कह सकते हैं कि उनके द्वारा बहुत समय पहले से सुझाए गए शिक्षा के उद्देश्य आज की शिक्षा प्रणाली में विशेष रूप से शामिल होने चाहिए। जिनका प्रभाव भविष्य में एक **उत्कृष्ट** समाज के निर्माण के रूप में देखा जा सकता है। जिन्हें देखते हुए हम कह सकते

हैं कि उनके भविष्य के प्रति सोच बहुत ही सटीक और उत्तम थी। आज के युग में हमारी शिक्षा प्रणाली की सैद्धांतिक गिरावट एवं कमियों को दूर करने के लिए इस महान चिंतक द्वारा दिए गए शिक्षासंबंधी मूल्यों को अपनाने की महती आवश्यकता प्रतीत होती है।

समस्या कथन-"अरविंद के शैक्षणिक स्वरूप का समाज पर प्रभाव"

अध्ययन के उद्देश्य-

*अरविंद घोष जी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।

* अरविंद घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।

अध्ययन की विधि- प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक स्त्रोत का उपयोग किया गया है।

अध्ययन की परिसीमाएं-

प्रस्तुत शोध में अरविंद जी के केवल शैक्षिक दर्शन का ही अध्ययन किया जाना सुनिश्चित किया गया है। प्रस्तुत शोध में प्राथमिक और द्वितीयक स्रोत साहित्य का उपयोग किया गया है।

श्री अरविंद जी का शिक्षा दर्शन-

श्री अरविंद जी की यह धारणा थी कि जीव की आत्मा में ज्ञान सदा से ही सुषुप्त अवस्था में गुप्त रहता है। शिक्षा का आधार अंतःकरण है। जिसके चार पटल बताए गए हैं,तथा उनके प्रशिक्षण और विकास पर बल दिया गया है। अंतःकरण का प्रथम पटल चित्त है। और जो अन्य तीनों पटलों का आधार है। जब भी हम कुछ याद करते है।तो वह हमारे चित्त में एकत्र हो जाती है। अंतःकरण का द्वितीय पटल मनस है। जिसमें अन्य पटल एकत्र होते हैं। और इसे दर्शन की भाषा में मस्तिष्क कहा जाता है। अंतःकरण का तीसरा पटल बुद्धि है। मस्तिष्क जिस ज्ञान को स्वीकार करता है। उसे परिष्कृत करने का वास्तविक यंत्र बुद्धि है। इसमें रचनात्मक, व्याख्यात्मक, संश्लेषणात्मक विश्लेषणात्मक एवं आलोचनात्मक शक्तियां पूर्णतः निहित होती है।अंतःकरण का चौथा पटल सत्य के अंतः दृष्टि परख प्रत्यक्षीकरण की शक्ति है। इसमें ज्ञान का प्रत्यक्ष दर्शन होता है।

अरविंद घोष जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

श्री अरविंद जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

(1)मस्तिष्क एवं आत्मा की सबलता- के लिए मानव के आंतरिक शक्तियों का विकास किया जाना अत्यंत आवश्यक है। इसलिए वे आध्यात्मिक शिक्षा की ओर अधिक ध्यान देते थे, जिससे मस्तिष्क और आत्मा को शक्ति तथा बल प्राप्त हो सके।) शारीरिक विकास और शुद्धि- इसके अंतर्गत सर्वप्रथम शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक विकास करना है। उन्होंने शारीरिक विकास में शारीरिक शुद्धि को भी सम्मिलित किया, क्योंकि उनका मानना था कि शरीर के उचित विकास इसकी शुद्धि के बिना मानव का आध्यात्मिक विकास संभव नहीं हो सकता। इसलिए आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन पथ पर चलकर पवित्र जीवन प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

(2) ज्ञानेंद्रिय की शिक्षा- अरविंद जी ने पांचो ज्ञानेंद्रिय (शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध)के प्रशिक्षण पर अत्यधिक बल दिया है। शिक्षक का प्रथम कर्तव्य है कि वह बालक को इस प्रकार का शिक्षण दे, जिससे वह ज्ञानेंद्रियों का उचित प्रयोग कर सके। एवं स्वयं का सर्वोत्कृष्ट विकास कर सके।

(3) मानसिक विकास- इसके अंतर्गत बालक का मानसिक विकास शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। मानसिक विकास से तात्पर्य स्मृति, चिंतन, तर्क, कल्पना, दूरदृष्टि तथा निर्णय आदि सभी मानसिक शक्तियों से है। अतः शिक्षा को उपरोक्त सभी प्रकार की शक्तियों का विकास करना चाहिए।

(4) वास्तविकता का ज्ञान- बालक के अहम् भाव से ऊपर उठकर यथार्थता को पहचान सकने की क्षमता का विकास किया जाना शिक्षा का महान लक्ष्य होना चाहिए।

(5) आध्यात्मिक विकास - अरविंद जी ने शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य व्यक्ति का आध्यात्मिक विकास करना बतलाया है। उनके अनुसार प्रत्येक व्यक्ति में कुछ दैवीय अंश होते हैं शिक्षा इसी दैवीय अंश को खोजने, प्रकट करने, विकसित करने तथा पूर्णता की ओर ले जाना है।

(6) चेतना की उत्पत्ति - अरविंद जी के विचार से हर प्राणी में दिव्य शक्ति विद्यमान है। इसी दिव्य शक्ति को पहचानने की चेतना उत्पन्न करना ही शिक्षा का प्रथम उद्देश्य है।

(7) अंतःकरण का विकास -अरविंद जी के अनुसार शिक्षा का प्रमुखतम उद्देश्य बालक के अंतःकरण का उचित विकास करना है उन्होंने अंतःकरण के चार पटल अथवा चार स्टार बताए हैं - चित्त,मानस, बुद्धि, तथा ज्ञान इन सभी स्तरों का विकास ही अंतःकरण का विकास माना है। शिक्षा को उक्त चारों स्तरो का विकास हर दृष्टि से करना ही प्रमुखता होनी चाहिए।

(8) स्व का ज्ञान -स्वयं को जानना अनुभूति करना इस जीवन का परम लक्ष्य है केवल उसी शिक्षा को वे वास्तविक मानते हैं जो इस भेद की इस देश की पूर्ति कर सके अर्थात जो मनुष्य को उसकी शक्तियों का अनुभव करा सके कि उसमें एक अंतःकरण एक मन, एक दिव्य शक्ति, अति मानस तथा श्रेष्ठ आध्यात्मिक पुरुष भी विद्यमान है।

(9) व्यक्तित्व का समन्वित विकास- व्यक्तित्व से आशय मस्तिष्क का पूर्ण विकास होना,
तथा सर्वश्रेष्ठ मस्तिष्क और आत्म चेतना का ज्ञान देकर उसे जीवन में प्रयोग करने की शक्ति शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

अरविंद जी की दर्शन के आधारिक सिद्धांत

१)शिक्षा द्वारा बालक का शारीरिक, नैतिक, चारित्रिक, संवेगात्मक विकास तथा उसे 'पूर्ण मानव' बनाएं।

२) शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से हो शिक्षा में धार्मिक अंश अवश्य होना चाहिए वरना भ्रष्टाचार फैलेगा।
३) शिक्षा के विषय रोचक होने चाहिए।
४)अध्यापक का कार्य छात्रों के तमस् गुणों का दमन करना, रजस् गुणों को अनुशासित करना एवं सात्विक गुणों को जागरूक करना होना चाहिए।
५) शिक्षा का आधार ब्रह्मचर्य होना चाहिए।
६) शिक्षा का केंद्र बालक होना चाहिए।
७) शिक्षा को बालक की शारीरिक शुद्धि करनी चाहिए।
८)शिक्षा व्यक्ति में निहित समस्त शक्तियों को इस प्रकार विकसित करें, जिससे वह उनसे पूर्ण रूप से लाभान्वित हो।
९)पूर्ण योग के लिए पूर्ण शिक्षा की आवश्यकता है। पूर्ण शिक्षा का तात्पर्य संपूर्ण मनुष्य की शिक्षा से है।
१०) शिक्षा द्वारा ज्ञानेंद्रियों एवं कर्मेंद्रियों को प्रशिक्षित करना चाहिए।

शारीरिक विकास और शुद्धि- इसके अंतर्गत सर्वप्रथम शिक्षा का उद्देश्य बालक का शारीरिक विकास करना है। उन्होंने शारीरिक विकास में शारीरिक शुद्धि को भी सम्मिलित किया, क्योंकि उनका मानना था कि शरीर के उचित विकास इसकी शुद्धि के बिना मानव का आध्यात्मिक विकास संभव नहीं हो सकता। इसलिए आध्यात्मिक तथा नैतिक जीवन पथ पर चलकर पवित्र जीवन प्राप्त करना अत्यंत आवश्यक है।

अरविंद घोष जी के शैक्षिक विचारों का वर्तमान शिक्षा में योगदान-

1) मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, साहित्य, गणित,सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला और खेलकूद, व्यायाम, बागवानी भजन, कीर्तन आदि को प्राथमिक स्तर पर महत्वपूर्ण मानते थे जो वर्तमान शिक्षा के लिए बहुत ही आवश्यक है। वर्तमान में नई शिक्षा नीति (2020) के संदर्भ में भी अरविंद जी के विचार अत्यंत प्राथमिक एवं प्रभावशाली है।
२) माध्यमिक स्तर पर अरविंद जी ने मातृभाषा, अंग्रेजी, फ्रेंच, गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जंतु विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, स्वास्थ्य विज्ञान, भूगर्भ विज्ञान, सामाजिक अध्ययन एवं चित्रकला तथा खेलकूद, व्यायाम, बागवानी, कृषि अनुसंधान, योग तथा ध्यान को उपयुक्त स्थान प्रदान किया है। जो वर्तमान समाज को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।
३) माध्यमिक स्तर के विस्तार के पश्चात् शिक्षा के उच्च स्तर पर विज्ञान के ज्ञान के साथ-साथ सभ्यता का इतिहास, जीवन का विज्ञान, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, भारतीय व पश्चात दर्शन,अंतरराष्ट्रीय संबंध एवं विश्व एकीकरण, कृषि अन्य शिल्प एवं भजन, कीर्तन, ध्यान,व योग को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। जो वर्तमान समय में शिक्षा के महत्वपूर्ण विषय के रूप में प्रतिपादित किया जा रहा है। उदाहरण के रूप में नई शिक्षा नीति (2020) के अंतर्गत कौशल विकास जैसे बिंदु के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के आवश्यक गतिविधियों की व्याख्या की गयी है। जो वर्तमान शिक्षा के लिए अत्यंत सराहनीय एवं उपयोगी है।
४) वर्तमान समय में समाज में मूल्य का ह्रास शिक्षा के क्षेत्र में बड़ी समस्या बनकर उभरी है इसके समाधान हेतु अरविंद जी के दर्शन एवं विचार अत्यंत प्रासंगिक है।
अतः हम कह सकते हैं कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सन्दर्भ में अरविंद जी के विचार अत्यंत प्रासंगिक एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। जिनका प्रयोग आवश्यक रूप से बच्चों के सर्वांगीण विकास हेतु शिक्षा के सभी स्तरों पर लागू किया जाना श्रेष्ठकर साबित होगा।

निष्कर्ष -उत्कृष्ट एवं महान दार्शनिक शिक्षाशास्त्री अरविंद घोष जी समाज को राष्ट्रीय शिक्षा देना चाहते थे। और देश को विकसित करने में अपना योगदान आज भी दे रहे हैं।अरविंद जी का शिक्षा दर्शन न केवल भारतीय सीमा तक सीमित है, बल्कि पांडिचेरी अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा केंद्र की शाखाएं देश तथा विदेश में भी अपनी सफलता का परचम लहरा रही है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि आज की शिक्षा प्रणाली जो कि अपने उद्देश्यों से भटक गई है। इसे अरविंद जी द्वारा बताए गए शिक्षा के उद्देश्य द्वारा सही मार्ग पर ला सकते हैं। जो कि व्यक्ति के विकास के लिए अत्यंत आवश्यक एवं उपयोगी है।

References

1. श्री अरविंद, (1994) मानव चक्र पांडिचेरी: श्री अरविंद आश्रम।
2. श्री अरविंद. (1994) श्री अरविंद अपने विषयों में, पांडिचेरी श्री अरविंद आश्रम।
3. नवजात (2001). दिव्य शरीर में दिव्य जीवन. पांडिचेरी श्री अरविंद सोसायटी।
4. छोटी नारायण शर्मा, (2002). श्री अरविंद (संक्षिप्त जीवनी) नई दिल्ली: श्री नवीन बाहरी, द मदर फर्म ।
5. मैत्रा,एस.के.(2004) श्री अरविंद दर्शन की भूमिका, पांडिचेरी: श्री मीरा ट्रस्ट ।
6. अग्रवाल अर्चना: एजुकेशनल थॉट्स ऑफ श्री अरबिंदो
7. चौबे, सरयू प्रसाद: कुछ महान भारतीय शिक्षक
8. घोष, श्री अरविंदो: द लाइफ डिवाइन
9. जायसवाल, सीताराम: शिक्षा दर्शन, प्रकाशन केंद्र लखनऊ
10. तनेजा, वी०आर० एजुकेशन थिंकर, अटलांटिक पब्लिकेशन एंड डिस्ट्रीब्यूटर,नई दिल्ली
11. वसु, रंजीत कुमार: श्री अरविंद का आतिमानस् एवं दिव्य जीवन, श्री अरविंद सोसायटी, रांची
12. समकालीन, दार्शनिक चिंतन प्रथम संस्करण कानपुर